International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact
Factor: 6.939 |

भारतिय साहित्य के अध्ययन में कठिनाईयॉ

डॉ. विनोद जीवनतारे

आर. एस. मुंडले धरमपेठ कला व

वाणिज्य महाविद्यालय, नागपूर.

भारतीय साहित्य के अभ्यास मे कठिनाईया याने भारतीय तत्वज्ञान का विकास विविध विचार दर्शन रचना काला नुसार कैसे रहनी चाहिए, यह प्रश्न समस्याके रूपमे अपने सामने आता है।

प्रथमत: 'मनु य'समझना चाहते है, तो उसकी प्रगती मे, उन सभी क्षेत्रों का अध्ययन करना स्वाभाविक है। जिनमे उसेने जीवन में उत्कृ ठता हासिल की है। लेकिन प्राचिन साहित्य की कालानुकमिक संरचना के कारण उस क्षेत्र का अध्ययन कठिन हो गया है। दूसरा यह की मनु य को समझने के दो तरीके है। अंतरिक्ष की परवाह किए बिना मनु य को एक सामान्य इंसान के रूप में मानव जाति के संदर्भ में समझा जा सकता है। दूसी विधि के लिए इसके विशि ट रूप की खोज की आवश्यकता है। यह ोध ऐतिहासिक सामाजिक व्यवस्थाओं के संदर्भ में और समय की सीमा के भीतर किया जाना है। तो यह विशे ाता है। इसे मनु य के विभिन्न अंग या विभिन्न भाग को समझाया नही जा सकता। इस लिए हमे इसके विभिन्न रूपों की तलाश करनी होगी। लेकिन इंसान तो इंसान है। इसका पूर्ण रूप इसके सामान्य और विशि ट तत्वो मे निहीत है। इसलिए प्राचीन साहित्य के कार्यकाल के अभाव के कारण विभिन्न कालों में भारतीय मनु य के विकसित रूपों को समझना कठिन हो गया है। आज उपलब्ध भारतीय साहित्य में सामाजिक विकास की कोई ठोस जानकारी नही है। और दुसरी बात यह है कि उस व्यक्ती क काल के उल्लेचा का सर्वथा अभाव है। उदाहरण के तौर पर इस देश के बारे में चीन के बारे में कहा जा सकता है। जैसे जीन मे प्राचीन घरेलू कार्यालय है। कब्रिस्तान पर रेखांकन खुदे हुए है। तो चीन का पिछले ढाई हजार साल के इतिहास को विद्वत्तापूर्ण तरीके से बताया जा सकता है। मिस्त्र, असिरियन सुमेंरीयन इत्यादि देश की संस्कृति के बारे में ऐतिहासिक घटना है। लेकिन भारतीय इतिहास का अनुमान पौराणिक कथाओं और महाकाव्यों के विवरण से लगाना पडता है। आज हमारे इतिहास को लिखने के लिए काश्मीर और खंबायत के पुराने ाासकों द्वारा लिखे गए कुछ ही रचनाऐ मिलती है। भारतीय भूमी और प्रचुर साहित्य का निर्माण हुआ। इस अर्थ में यह प्रतिभाशाली लेखकों और दार्शनिकों की भूमी है। उस साहित्या को भी मौखिक परंपरा द्वारा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact
Factor: 6.939 |

संरक्षित किया गया है। हालांकि यह सब अमूल्य है, लेखक की समयरेखा ायद ही कभी उस साहित्य से निर्धारित होती है। हमारे सामने कठिनाई का मुख्य कारण भारतीय पुरू ा है। यह प्राची साहित्य उनके द्वारा बनाए गए विशि ट समाजवाद और संस्कृती का अध्ययन करने के लिए एकमात्र उपकरण के रूप में उपलब्ध है। इस समस्या के समाधान के लिए हमें भारतीय इतिहास के विकास के युग का विकास करना होगा।

भारतीय साहित्या के उपरोक्त दार्शनिक काल पर टिप्पणी करते हुए प्रो. हिरण्यान्ना ने कहा की यह कमी प्राचीन भारत के इतिहास में कालक्रम के लगबग पूर्ण अभाव के कारण है। विवरणों की हमारी अज्ञानता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। इस इतिहास के पहले हजार व ों मे एकमाच घटना जिसे कालानुक्रमिक कहा जा सकता है। वह है ४८७ ईसा पूर्व मे बुद्ध का अंत। ''इस काल के बारे में मतभेद है। हालांकि इस काल के बारे में कई मतभेद है। लगभग सभी विद्वान इस बात पर सहमत है की, भगवान बुद्ध इस धरती पर अस्सी साल तक रहे यह एक प्रश्न है।

भारतीय इतिहास

भारत में मानव इतिहास हो सकता है भारतीय इतिहास का केवल भौतिकवादी या चिदवादी रूप से समझने में कई कठिनाई है। प्राचीन भारतीय दर्शन जैसे धर्मशास्त्र, महाकाव्य, कला, संगीत आदि प्रकार भारतीय संस्कृतिमे दिखाई देता है। सामाजिक, राजकीय वास्तव यह केवल साहित्य व कला के सहायसे समझा नही जा सकता। संस्कृति का आकार, परिवर्तन और गती इन तत्थ्यो का प्रारंभ से अभ्यास करना पडता है।उपरी अभ्यास से संस्कृति का ोध लेना व्यर्थ होगा। मॅक्समुलर ने भारतीय इतिहास के बारेमे कहते है की, भारतीय कभी रा ट्रवाद को नही जानते थे। उनके दिमाग कभी भी रा ट्रवाद से अभिभूत नही थे। कवीयों को प्रेरीत करने के लिए कोई नायक नही थे और इतिहासकारों को लिखने के लिए कोई इतिहास नही था। भारतीयों के लिए धर्म और दर्शन ही एकमात्र क्षेत्र थे। तभी वे साहित्यक रचन और उपासना के माध्यम से स्वतंत्रता का आनेद ले सकते थे। यही कारण है की धर्म औ अध्यात्म की भावना भारतीय मनु य के मन में गहराई से समाई इुई प्रतीत होती है। लेकिन भारत दर्शन का देश है।उनका संघ र्ा विचार का वि ाय था, अनका अतीत सृजन की समस्या था और उनका भवि य अस्तित्व की समस्या था। भारतीयों के लिए वर्तमान ही अतीत और भवि य की समस्याओं का एकमात्र समाधान है। भारतीय व्यक्ती का मन कभी भी वर्तमान पर स्थिर नही रहा क्योंकी उसने कभी इसका अनुभव नही किया।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact
Factor: 6.939 |

इसलिएवह कभी भी अपनी ाक्ती और ाक्ती का पूर्ण उपयोग नही कर पाया। भारतीय इतिहास के विभिन्न वर्गों में जिस प्रकार आध्यात्मिक विचार आकार लेते थे, वह स्वाभाविक रूप से अंधविश्वा से भिन्न लेकिन आध्यात्मिकता के उत्थान के लिए था। इन सबका संयुक्त प्रभाव यह है की भारत के अतिरिक्त विश्व में एक भी ऐसा रा ट्र नही है। जिसमें आत्मा के आन्तरीक जीवन ने समस्त जनमानस के बाहय जीवन के सभी क्षेत्रों को समाहित किया हो। एक रा ट्र के रूप मे किसी रा ट्र के इतिहास मे अपना स्थान मजबूत करने के लिए कहने की जरूरत नही है की उन गुणों को भारतीयों ने न ट कर दिया था, इस लिए दुनिया के राजनीतिक इतिहास में भारत का कोई स्थान नही है। मिस्त्रियों, यहुदियों, बेबीलोनियों, अप्सियन, यूनानियों, रोमनों आदि द्वारा बसाए गए क्षेत्र। विश्व राजनीतिक क्षितिज पर वंश का उदय हुआ। उस समय भारत अपने राजनीतिक अस्तित्व के एक ऐसे छोटे दु चक्र में फंसा हुआ था, जो दुनिया के अन्य देशो के लिए लगभग अदृश्य था। यदयपि विश्व इतिहास में भारत का कोई स्थान नही है, फिर भी मानव इतिहास में दर्शन के क्षेत्र में इसका स्थान अटूट है। भारतीयों ने साम्राज्य का विस्तार करने के बजाय दर्शन के निर्माण मे अपनी सारी उर्जा खर्च कर दी।

इससे सिद्ध होता है की यदयपि मैक्समुलर की आलोचना में तथ्य है, पूर्व सत्य को पूर्व अस्तित्व नही कहा जा सकता। भारतीय साहित्य के अध्ययन में कितनी भी कठिनाइयॉ क्यो न हो भारतीय व्यक्ती साहित्यकार, विचारक, गीत, कला आदि सामाजिक आर्थिक राजकिय क्षेत्र मे प्रगती को दर्शाता है। इस मे कोई दोराह नही।

lnHkZxzFk

1½ Erich Fromm- The Sane. Society.

2½ J. Bronowski – The Ascent of Man

3½ /kekun dk lch &Hkxokuc/n

4½ jko lkgc dlc & ekuo vkf.k /kefpru